राहत

(नाटक शुरू होने पर बड़ा अफ़सर बी. सिंह इधर-उधर घूम रहा है। बार-बार घड़ी देखता है, जैसे उसे किसी का इंतजार हो। छोटा अफ़सर भ. राम आता है)

सभी : *(माई समेत सारे लम्बी आवाज़ में)* जी...

भ. राम : जय हिंद जनाब।

बी. सिंह : तुम्हें पता है, मंत्री जी किसी वक़्त भी पहुंच सकते हैं।

भ. राम : हां जनाब, स्कूल के ग्राउंड में उनका हेलीकॉप्टर किसी वक़्त भी आ सकता है... वहां का सारा प्रबंध मैंने अपनी देखरेख में पूरा किया है।

बी. सिंह : और तू सज-धजकर इस तरह घूम रहा है जैसे किसी बारात में आया हो।

भ. राम : जनाब मैं समझा नहीं... मैं तो आमतौर पर यही पोशाक पहनता हूं।

बी. सिंह : *(पास जाकर, उसकी बुश्शर्ट पकड़कर)* यह बुश्शर्ट और पैंट तू हर रोज पहनता है ?

भ. राम : हां जनाब... आपको पता है उम्र के साथ पेट बढ़ ही जाता है... इस बुश्शर्ट की फिटिंग इस तरह की है कि इसमें पेट की मोटाई छुप जाती है... आदमी ज़रा चुस्त लगता है।

बी. सिंह : *(व्यंग्य से)* तो तू चुस्त लग रहा है ?

भ. राम : जी, कोशिश तो यही है।

बी. सिंह : ऊपर से बाढ़ आई हुई है, लोग मुसीबत में है और तू चुस्त लगने की कोशिश कर रहा है, जबकि तुम्हें बिल्कुल इसके विपरीत दीखना चाहिए।

भ. राम : मैं समझा नहीं जनाब ?

बी. सिंह : यही तो मैं कह रहा हूं कि तू कुछ नहीं समझता... अगर समझता तो

अब तेरा हुलिया इस तरह का न होता। तुम्हें मंत्री के आने पर अपने को इस तरह पेश करना चाहिए कि बाढ़ आने पर तू रात को सोया नहीं, लोगों को राहत पहुंचाने के लिए कीचड़ में पैदल फिरता रहा, टखनों तक पानी, घुटनों तक पानी, कमर तक पानी, गरदन तक पानी था, पर तूने अपनी जान की परवाह नहीं की, अपनी ड्यूटी को निभाता हुआ बाढ़ पीड़ित लोगों तक पहुंचा और उनके लिए राहत सामग्री पहुंचाई। वैसे तेरे इलाके में जब बाढ़ का पानी चढ़ा था तो तू उस वक़्त कहां था?

भ. राम : जनाब हमारे इलाके में बाढ का पानी अचानक चढ़ आया था, उस वक़्त रात का समय था, सब लोग अपने घरों में सो रहे थे।

बी. सिंह : मैंने पूछा है, तू कहां था?

भ. राम : जी, मैं घर में सो रहा था।

बी. सिंह : फिर तुमने क्या किया?

भ. राम : मैंने क्या करना था, मैं तो सो रहा था।

बी. सिंह : यही तो अखबारों वाले लिख रहे हैं कि जब बाढ़ आई तो सरकार सो रही थी... पर तुम्हें साबित करना है कि तुम सोए नहीं थे बल्कि हरकत में थे।

भ. राम : हरकत?

बी. सिंह : हरकत यह नहीं कि तू अपनी बीवी के साथ कलोल कर रहा था, हरकत यह कि तू घूम रहा था, टखनों तक पानी था, घुटनों तक पानी था, कमर तक पानी था, गरदन तक पानी था और जब गरदन तक पानी आया तब भी तू चल रहा था, लोग दरख़्तों पर चढ़े हुए थे, सांप फुफकार रहे थे, पर तू उन्हें डबलरोटी और सूखी चीजें खाने के लिए पहुंचा रहा था... *(ज़ोर देकर)* अब जा और इन कपड़ों पर एक कीचड़ की बाल्टी पलट ले, पैंट को घुटनों तक ऊपर चढ़ा ले... मुंह पर मिट्टी मल ले।

भ. राम : मिट्टी?

बी. सिंह : नहीं कालिख मल ले, पर तू क्यों मलेगा? वह तो लोग मल रहे हैं... तेरे मुंह पर भी और मेरे मुंह पर भी, अब मेरे मुंह की तरफ क्या देख रहा है? जा, जैसा मैंने कहा है, वैसा कर, और हां, बालों को बिखेर ले। ये कंघी-पट्टे नहीं चलेंगे। लोग मर रहे हैं और तुम्हें कंघी-पट्टे सूझ रहे हैं... और आंखों में कोई दवाई डाल ले, जिससे तेरी आंखों

में लाली उतर आए और ऐसा लगे कि तू रात को उनींदा रहा।
(अपने आप से) मुझे भी कुछ ऐसा ही करना चाहिए *(जेब में से रुमाल निकालता है, उसे गांठ देकर खुद ही गले में डाल लेता है और फिर उसमें अपनी बाजू को उड़का लेता है।)* अब ठीक है... मैं बाढ़ वाले क्षेत्र का दौरा करने गया... वहां मेरा पैर फिसल गया, मैं गिर गया और बाजू टूट गई।
(कीचड़ से लथपथ भ. राम आता है। अब उसका हुलिया बिल्कुल बदला हुआ है।)

बी. सिंह : *(उसकी तरफ देखकर)* हां, अब ठीक है... हुलिया बिल्कुल बिगड़ा हुआ है, सरकार का पूरा नुमाइंदा लग रहा है।

भ. राम : पर जनाब आपकी बाजू?

बी. सिंह : मैं फिसल गया था और यह टूट गई।

भ. राम : पर कुछ देर पहले तो भली चंगी थी।

बी. सिंह : कुछ देर पहले तो तू भी भला चंगा था।

भ. राम : जी समझ गया, टखनों तक पानी था, घुटनों तक पानी था, गरदन तक पानी था, आप चलते रहे, लोग दरख़्तों पर चढ़े हुए थे, छतों पर चढ़े हुए थे। सांप फुफकार रहे थे, आप राहत सामग्री पहुंचाने के लिए छत पर चढ़ने लगे तो फिसल गए बाजू टूट गई, अब आपके पास इतना भी वक़्त नहीं कि आप अस्पताल जाओ... एक्सरे करवाओ, बेशक आपको बहुत दर्द हो रहा है, पर बाढ़ पीड़ितों के दर्द को देखकर आप अपना दर्द भुला बैठे हैं।

बी. सिंह : हां... और तुम अब यहीं रहो... *(घड़ी देखकर)* मंत्री जी किसी वक़्त भी आ सकते हैं, मुझे उन्हें लेकर यहीं आना है।
(जाता है।)

भ. राम : भगत राम, तूने बहुत से नाटक देखे होंगे, पर इस तरह का नाटक करने का भी और देखने का भी आज मौका मिला है, टखनों तक पानी, घुटनों तक पानी, कमर तक पानी, लोग छतों पर चढ़े हुए थे, दरख़्तों पर चढ़े हुए थे, सांप फुफकार रहे थे और डी.सी. साहिब बिना परवाह किए चलते रहे और गिर गए...बाजू टूट गई...भई वाह।
(बी. सिंह मंत्री को साथ लेकर आते हैं।)

भ. राम : जय हिंद।

मंत्री : जय हिंद...

(सवालिया नज़रों से बड़े अफ़सर की तरफ देखता है, जैसे पूछ रहा हो छोटा अफ़सर कौन है।)

बी. सिंह : जनाब, यह मेरा डिप्टी है, सीधा बाढ़ग्रस्त इलाके का दौरा करके आ रहा है, ताकि सीधी जानकारी ले सके कि राहत का काम किस तरह चल रहा है।

मंत्री : इसे कपड़े बदलने की फुर्सत नहीं मिली ?

बी. सिंह : कपड़े बदलने की ? जी, इसे तो सिर खुजलाने... मतलब कि सिर पर कंघी करने की भी फुर्सत नहीं मिली।

मंत्री : वह तो दीख रहा है, दरअसल सरकार चलती ही इस तरह के अफ़सरों के दम पर है, बाढ़ में लोगों का बहुत नुक्सान हुआ है।

बी. सिंह : जी हां, यह तो आपको जहाज में दीख ही गया होगा ?

मंत्री : मुझे डाक्टरों ने सलाह दी है कि मुझे हवाई जहाज का सफर नहीं करना चाहिए... किसी भी वक़्त दिल का दौरा पड़ सकता है... पर मैंने कहा अगर लोग तकलीफ़ में हैं तो मैं अपने दिल को संभालकर क्या करूंगा ?

बी. सिंह : हां जनाब, आप का दिल भी वहीं होना चाहिए जहां लोगों का दिल है... वैसे लोगों का दिल कहता है कि यह बाढ़ बारिश के कारण नहीं आई बल्कि सरकार की लापरवाही के कारण आई है।

मंत्री : वे बकते हैं... हम अपनी जान की परवाह न करते हुए यह सर्वेक्षण कर रहे हैं और वे अब भी कहते हैं कि हम लापरवाह हैं, अगर वे कहते हैं, कहते रहें, हमें इसकी भी परवाह नहीं है।

बी. सिंह : हां जी, अगर सरकार हर बात की परवाह करने लगे तो एक दिन भी न चले।

मंत्री : अगर वे कहते हें तो कहते रहें, अगर वे मरते हैं तो मरते रहें, हमें उसकी परवाह नहीं है।

बी. सिंह : *(सवालिया लहजे में)* जी ?

मंत्री : नहीं, अगर वे मरते हैं तो हमें परवाह करनी पड़ेगी, क्योंकि कल को हमें उनकी वोट लेनी हैं, आपने यह बाजू क्यों बांध रखी है ?

बी. सिंह : बस जी, मामूली-सी चोट है, दौरे पर गए कीचड़ के कारण पैर फिसल गया, ऐसे ही एक हड्डी-सी टूट गई है।

मंत्री : हड्डी टूट गई और आप इसे मामूली सी चोट कह रहे हो, हड्डी का टूटना कितना तकलीफदेह होता है यह तो मुझे ही पता है, पिछले

साल बाथरुम में फिसलकर हड्डी तुड़वा बैठा, अपना नाड़ा खुद बांधने के लिए अवाज़ार हो गया था, बहुत बार अपनी स्टैनो से बंधवाना पड़ता था, वो शरम करे पर कोई क्या कर सकता था, मजबूरी थी, हां, आपकी जानकारी के अनुसार बाढ़ के कारण कितनी जानों का नुकसान हुआ है ?

बी. सिंह : *(भ. राम से)* भगतराम, कितना नुकसान हुआ है ?

भ. राम : जनाब, अब तक बीस लाशें गिनी जा सकी हैं।

मंत्री : उनके वारिसों के लिए बीस-बीस हजार मुआवजे का एलान कर दो।

भ. राम : पर जनाब, वे सारी लाशें लावारिस हैं।

मंत्री : क्या कहा ? लावारिस हैं ? तुम्हें पक्का पता है ?

भ. राम : हां जनाब, पक्का पता है, मैंने अपनी निगरानी में उन लावारिस लाशों का संस्कार करवाया है।

मंत्री : अगर वे लाशें लावारिस थीं तो एलान कर दो, उनके वारिसों को एक-एक लाख रुपये का मुआवजा दिया जाएगा, ताकि सबको पता चल जाए कि लोगों की चुनी सरकार अपने लोगों का किस तरह ख़्याल रखती है, डंगर-ढोर का कितना नुकसान हुआ है ?

बी. सिंह : हां भगत राम, कितना नुकसान हुआ है ?

भ. राम : जी, उसका तो कोई हिसाब नहीं रखा जा सका। सैकड़ों पशु बाढ़ में बह गए हैं।

मंत्री : उनके मालिकों के लिए एक हजार की राहत का एलान कर दो।

भ. राम : पर मालिक कहां से मिलेंगे जनाब, पशु तो दूर से बहकर आए हैं।

मंत्री : तो फिर क्या हुआ, हमने तो एलान ही करना है।

बी. सिंह : हां जी, हमने तो एलान ही करना है।

भ. राम : जनाब, बहुत सारे पशु तो खूंटों से बंधे ही दम तोड़ गए हैं, उनके मालिकों को कोई राहत देनी है ?

बी. सिंह : क्यों जनाब, उन्हें कोई राहत देनी हैं ?

मंत्री : उन्हें राहत यह दो कि भरी सभा में बुलाकर उनके जूते मारो। खुद अपनी जान बचाने के लिए छतों पर जा चढ़े और पशु बेचारे खूंटों पर बंधे तड़पते हुए मर गए। पशुओं पर जुल्म करने वालों को माफ नहीं किया जा सकता।

बी. सिंह : नहीं किया जा सकता, क्यों भगत राम, माफ किया जा सकता है ?

भ. राम : नहीं जनाब, माफ नहीं किया जा सकता।

(एक माई बाहर से शोर मचाती हुई आती है।)

मंत्री : क्या बात है, माई ?

माई : बाढ़ ने मेरा सबकुछ तबाह कर दिया है।

मंत्री : क्या तेरी फसल बह गई है ?

माई : जी नहीं।

मंत्री : क्या तेरा डंगर-ढोर का नुकसान हो गया है ?

माई : नहीं जी, मेरे पास तो एक ही बकरी थी। उसे मैं अपने साथ छत पर ले गई थी।

मंत्री : देखा, जिन्हें बेजुबानों से प्यार हो, वे ऐसा ही करते हैं।

बी. सिंह : जी जनाब, ऐसा ही करते हैं। क्यों भगत राम, ऐसा ही करते हैं!

भ. राम : जी करते हैं, पर जनाब बकरी को तो छत पर चढ़ाया जा सकता है, भैंस को नहीं।

मंत्री : अगर आदमी चांद पर जा सकता है तो भैंस छत पर क्यों नहीं जा सकती ? डी.सी. साहब, जा सकती है ?

बी. सिंह : क्यों भगत राम, जा सकती है ?

भ. राम : अगर जनाब कहते हैं तो जा सकती है।

मंत्री : हां भाई, तो फिर तेरा क्या नुकसान हुआ है ?

माई: मेरी चार दरी, आठ चद्दर, दो दोतही, दो रजाई बुरी तरह से भीग गई हैं, मेरे लिए तो वही सबकुछ था।

मंत्री : कोई बात नहीं, हम तेरी मदद करेंगे, क्यों डी.सी. साहब, कल धूप निकली थी ?

बी. सिंह : क्यों भगत राम, कल धूप निकली थी ?

भ. राम : निकली थी।

मंत्री : डी.सी. साहब, धूप आज भी निकली है, क्या कल भी निकलेगी ?

बी. सिंह : क्यों भगत राम, कल धूप निकलेगी ?

भ. राम : उम्मीद तो है निकलेगी।

मंत्री : तो फिर कल माई की दरी, चद्दर, दोतही, रजाई सरकारी खर्च पर धूप में सुखा दो, लोगों को राहत पहुंचाना सरकार का फ़र्ज है।

सभी : *(माई समेत सारे लम्बी आवाज़ में)* जी...

(फिर सभी फ्रीज हो जाते हैं।)